MATTERS RAISED WITH PERMISSION

MR. CHAIRMAN: Shri Rajeev Shukla - Need to curb digital frauds in the country. You must also talk of social engineering by tackling these problems.

Need to curb digital frauds in the country

श्री राजीव शुक्ला (छत्तीसगढ़): सभापति महोदय, मैं आज एक बहुत ही गंभीर मुद्दा उठा रहा हूं। दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे डिजिटल लेन-देन और जैसे-जैसे हम नकदी अर्थव्यवस्था से कैशलैस अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं, डिजिटल धोखा-धड़ी की संख्या भी बढ़ रही है। यहां वित्त मंत्री जी बैठी हुई हैं। हर किसी ने अनुभव किया होगा कि धोखेबाज कैसे लोगों को मैसेज भेजकर उन्हें पैन नम्बर अपडेट करने, खातों को अनब्लॉक करने, क्रेडिट कार्ड पर गिफ्ट आदि देने के बहाने कॉल कर रहे हैं। हमें इस खतरे को रोकने के लिए कड़े उपायों की जरूरत है। यह सच है कि आज कार्ड और यूपीआई के माध्यम से भुगतान बढ़ गया है, लेकिन साथ ही लोग डिजिटल धोखा-धड़ी में लाखों रुपये खो रहे हैं। इनका जाल इतना सटीक होता है कि आईटी इंजीनियर, सरकारी अधिकारी, वकील और अकाउंटेंट भी इनके जाल में फंस जाते हैं और इनमें गरीब लोगों की संख्या तो बहुत ज्यादा है। वे उनको धमकाते हैं कि मैं तो बिहार से हूं, अगर हमें पकड़वा सकते हो, तो पकड़वा लो। आप हमें पकड़वा नहीं सकते हो। भारतीय रिज़र्व बैंक ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में 276 करोड़ रुपये के 6,659 डिजिटल धोखा-धड़ी के मामलों का हवाला दिया है। यह पिछले वर्ष रिपोर्ट किए गए 155 करोड़ रुपये के 3,596 धोखा-धड़ी वाले देन-लेन के मामलों से अधिक है। हमें यह सोचने की जरूरत है कि भुगतान प्रणालियों के भीतर खुफिया जानकारी कैसी बनाई जाए, जिसका उपयोग ऐसे लेन-देन को फिल्टर करने या ब्लॉक करने के लिए किया जा सकता है। साथ ही, हमारे लोगों की डिजिटल जागरूकता में सुधार के लिए व्यापक कार्य योजना की जरूरत है। सभी खातों में मोबाइल फोन है, लेकिन उनमें से अधिकांश को उन सुरक्षा उपायों की जानकारी नहीं है, जो उन्हें अपनी वित्तीय सुरक्षा के लिए अपनाने चाहिए। भारतीय बैंकों ने महत्वपूर्ण उपाय और सुझाव सुझाए हैं, जिनमें नए खातों में लेन-देन के लिए एक सीमा, ज्ञात धोखेबाजों के लिए एक सेंट्रल इंवेस्टिगेटिव एजेंसी और धोखाधड़ी की रिपोर्टिंग पर कैश फ्लो को रोकने के लिए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर शामिल हैं। 15 नवंबर तक के सरकारी आँकड़ों के अनुसार 2019 में राष्ट्रीय साइबर रिपोर्टिंग प्रणाली की शुरुआत के बाद से 1.3 मिलियन से अधिक शिकायतें प्राप्त हुई हैं। सवाल यह है कि हम कितने मामलों को ट्रैक करने और मामलों को सुलझाने में सफल हुए हैं। पुलिस भी इन मामलों में उस तरह से प्रशिक्षित नहीं है, जैसे उनको प्रशिक्षित होना चाहिए। वित्त मंत्री जी यहाँ बैठी हैं। जिस तरह से लोगों को बेवकूफ बना कर, धोखे से उन गरीब लोगों के पैसे लूटे जाते हैं, किसी के 30 हजार, 40 हजार, एक लाख, डेढ़ लाख रुपए, इससे लोग परेशान हैं। आप इस पर कुछ न कुछ करिए, यह बहुत जरूरी है। इसलिए मैं यह विषय यहाँ पर उठा रहा हूँ।

सभापति जी ने तो सोशल इंजीनियरिंग की बात कही, सोशल इंजीनियरिंग का इनसे बड़ा उदाहरण तथा प्रतीक और कौन हो सकता है! वे राजस्थान के जाट होने के बाद उपराष्ट्रपति हो

गए। सोशल इंजीनियरिंग की सारी मलाई तो आप ही खा रहे हैं, दूसरा कौन खा रहा है! क्या वहाँ से उपराष्ट्रपति पद पर कोई पहुँचा है? हमारे मिर्धा जी डिप्टी चेयरमैन तक पहुँचे थे, लेकिन आप यहाँ से वहाँ पहुँच गए, तो सोशल इंजीनियरिंग का आपसे बड़ा उदाहरण और कौन हो सकता है! यहाँ तो हम सोशल मीडिया और डिजिटल लेन-देन के विषय के ऊपर बोल रहे हैं, इसमें सोशल इंजीनियरिंग कहाँ से आ गई!

श्री घनश्याम तिवाड़ी (राजस्थान)**:** सभापति महोदय, मुझे एक बहुत छोटी सी बात कहनी है। मलाई नहीं खा रहे हैं, मलाई आपने छोड़ी है, मक्खन भी खा रहे हैं। मैं कांग्रेस पार्टी को बताना चाहूँगा कि मिर्धा साहब तो केवल उपसभापति बने थे और जाट का बेटा पहली बार आकर यहाँ तक पहुँच गया। हीरे के पारखी तो नरेन्द्र मोदी जी थे, जिन्होंने आपको यहाँ बैठा दिया। इससे बड़ी सोशल इंजीनियरिंग की बात क्या होगी! आप सबसे मिलते हैं। मुझे प्रसन्नता इस बात की है कि आप शेखावाटी के हैं और फिर यहाँ तक पहुँच गए हैं।

श्री सभापतिः प्रमोद तिवारी जी, हम आपको राजस्थान का ही मानते हैं। आप राजस्थान से सांसद हैं, क्या आप कुछ कह सकते हैं, ये मक्खन का आरोप लगा रहे हैं?

श्री प्रमोद तिवारी (राजस्थान)**:** सर, मैं 'तिवारी' हूँ, ये 'तिवाड़ी' हैं, यह फर्क है।

श्री सभापतिः मतलब फर्क क्या है?

श्री प्रमोद तिवारीः सर, राजस्थान में 'तिवाड़ी' लिखा जाता है, यहाँ उत्तर प्रदेश में 'तिवारी' लिखा जाता है। यह फर्क है।

श्री मुकुल बालकृष्ण वासनिक (राजस्थान)**:** सर, लेकिन दोनों राजस्थान से हैं।

श्री प्रमोद तिवारीः सर, हम भी हैं और जो बोल रहे हैं, ये भी राजस्थान से हैं।

श्री मुकुल बालकृष्ण वासनिकः लेकिन दोनों राजस्थान से हैं।

श्री सभापतिः क्या आप भी राजस्थान से हैं?

श्री प्रमोद तिवारीः जी, सर, यही तो मैं कह रहा हूँ।

श्री सभापतिः और नीरज डांगी ऑथेंटिक हैं।

श्री प्रमोद तिवारीः जी, सर। हम लोग सर्टिफाइड हैं।

MR. CHAIRMAN: I know, ये भी हैं। डा. मनमोहन सिंह जी भी हैं, वेणुगोपाल जी भी हैं।

श्री मुकुल बालकृष्ण वासनिक: सभापति महोदय, नीरज डांगी ऑथेंटिक हैं, हम ऑफिशियल हैं।

श्री सभापति: मैं सोच रहा था कि प्रमोद तिवारी जी मुझे प्रोटेक्शन देंगे, मुझ पर मक्खन खाने का आरोप लगा है।

श्री प्रमोद तिवारी: सर, आप इसको अदरवाइज़ न लें।

श्री सभापति: श्री अजय प्रताप सिंह।

श्री घनश्याम तिवाड़ी: सर, मुझे अपनी बात पूरी करने दें। मैं यह कह रहा था कि आप यहाँ तक पहुँचे, यह राजस्थान का सौभाग्य तो है ही, किठाना गाँव से आप यहाँ तक पहुँचे। मुझे आपकी पूरी यात्रा का पता है, तो आप यह कैसे कह सकते हैं कि सोशल इंजीनियरिंग नहीं है! सोशल इंजीनियरिंग के बारे में तो यह कहा गया कि जेली गाड़ दी। जाट जेली गाड़ देता है, आपने यहाँ भारत के सभा गृह में आकर जेली गाड़ दी है।

MR. CHAIRMAN: The following Members associated themselves with the issue raised by Shri Rajeev Shukla: Dr. Amar Patnaik (Odisha), Shri Abir Ranjan Biswas (West Bengal), Shrimati Vandana Chavan (Maharashtra), Dr. Sasmit Patra (Odisha), Dr. Santanu Sen (West Bengal), Shri Sujeet Kumar (Odisha), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Dr. John Brittas (Kerala), Shrimati Jebi Mather Hisham (Kerala), Shri Kanakamedala Ravindra Kumar (Andhra Pradesh), Shri Sandosh Kumar P (Kerala), Shri Sanjeev Arora (Punjab) and Dr. V. Sivadasan (Kerala).

Shri Ajay Pratap Singh. Request for changing name of Sanjay Gandhi National Park and Tiger Reserve in Madhya Pradesh.

Demand to change the name of Sanjay Gandhi National Park and Tiger Reserve situated in Sidhi, Madhya Pradesh

श्री अजय प्रताप सिंह (मध्य प्रदेश): सभापति महोदय, परसों आपने आसंदी से शेक्सपियर को उद्धृत करते हुए कहा था कि नाम में क्या रखा है, फिर आपने ही समाधान दिया कि आज के दौर में नाम का बड़ा महत्व है। सभापति महोदय, मध्य प्रदेश एक टाइगर स्टेट है। मध्य प्रदेश में स्थित मेरा गृह जिला, सीधी प्राकृतिक संपदा और प्राकृतिक विशेषताओं से भरपूर है। सीधी जिले के बरगड़ी जंगल में पनघोरा ग्राम के पास 27 मई, 1951 को विश्व का पहला सफेद बाघ तत्कालीन रीवा महाराज मार्तण्ड सिंह जी ने पकड़ा था। फिर उन्होंने उसका पालन-पोषण किया। उन्होंने उसका नामकरण 'मोहन' किया। महोदय, वहाँ के कर्मचारी उस बाघ को आदर से 'मोहन सिंह'